

प्राचीन क्रिया योग तान्त्रिक ग्रन्थ

# Ancient Kriya Scriptures

<https://www.amazon.com/author/chandrashekhar>

*Ancient Kriya Yoga Mission*

ancientkriyayoga@gmail.com

# Scriptures

<b>1 Hanuman Chalisa Demystified</b>	<b>1</b>
2	4
<b>3 Drink Air Therapy</b>	<b>7</b>
4	9
5	11
6	14
7	17
<b>8 The Gitas</b>	<b>19</b>
9	23
<b>10 Selected Works of Lahiri Mahasaya</b>	<b>26</b>
11	28
12	30
13	33
<b>14 Patanjali Yoga Sutras</b>	<b>35</b>
<b>15 Linga Puran</b>	<b>38</b>
16	41
<b>17 The Kabir Gita</b>	<b>43</b>
<b>18 The Avadhuta Gita</b>	<b>45</b>

## Hanuman Chalisa Demystified

<https://www.amazon.in/dp/BOCPBKVN34>

This scripture is an outcome of inner revelations of mystical meanings of Hanuman Chalisa. Penning down itself was full of eternal vibrations which resembled as if being dictated by a Siddha. This journey was full of inexplicable ecstasy and joy, laced with complete surrendering to witnessing the state of Hanuman. It depicts transcendental qualities and attributes of this state in its totality.

This body is just an instrument of meditation and the individual is nothing, the individual have nothing.

Hanuman is a special state of Siddhas, the qualities of which are described by Hanuman Chalisa. A Sadhak passes through infinite number of states during his Sadhana. Period of stay in any state varies depending on the peculiarities of that state as well the predicament of the Sadhak. During this course, the outer symptoms may not be described and grasped as aptly as inner symptoms. Outer symptoms like trembling and/or levitation of body often lead to bewilderment and amusement of the beholder. Whereas being in the same state, it leads to calm acceptance and grasp of what is happening to someone else being in that state.

There is no single prescribed path for Sadhana, simply because it varies from Sadhak to Sadhak, the root of which is often buried deep in one's Providence(Prarabdha). Hence no matter which path a Sadhak adopts for his journey to start with, he will get aligned to the best path, most suitable one for him, in due course of time, gradually. The single most important key is :

Continue seeking in with utmost Sincerity and Devotion.

Series of Commentaries as seen by The Divine Third Eye

# Hanuman Chalisa Demystified

Ancient Kriya Yoga Tantric Scripture



Bhagwan Maharishi Hiranyagarbha  
Lahiri Mahasaya  
Chandra Shekhar Kumar

 A Monastery of Realized Sages  
Ancient Kriya Yoga Mission  
A Divine Enterprise Empowered by The Third Eye

Hence irrespective of the peculiarities and idiosyncrasies associated with various paths, the Sadhak finds himself in a special state all of a sudden, often termed as being at one place in Siddha Loka. Gradually, he realizes that there are infinite such states, hence places in Siddha Loka, one of which is Hanuman. It becomes clear to him that practice (Sadhana) is gradual, but being in any such state is all of a sudden, involuntary ones during early stages of Sadhana.

The author started his journey with typical Pranayam like Anulom Vilom, Kapal Bhati, Bhastrika and Bhramari, practicing for 1 hour to 3 hours daily, in morning and evening. After a couple of years, he was attuned to an esoteric Pranayam akin to Bhastrika, the details of which are described in another book, Drink Air Therapy To Kill Diabetes: A Path To Self-Cure And Immortality. A couple of years later, he was revealed another esoteric Pranayam, which was again akin to Bhastrika with 24 x 7 hours in play.

Historians often attribute the composition of Hanuman Chalisa to Goswami Tulsi Das, whereas a Sadhak realizes, when time is ripe for him, that the particular Shabda is eternal, ever present, everywhere, perceptible to one only when one is ready during his course of Sadhana, including listening to these being chanted/sung by Siddhas, all the time, beyond the time.

## हनुमान चालीसा रहस्य कुंजिका

<https://www.amazon.in/dp/1978048467>

इस ग्रन्थ की रचना का आधार अन्तःपुर में 'हनुमान चालीसा' के गूढ़ अर्थों एवं अलौकिक अनुभूतियों का रहस्योद्घाटन है। इस पारलैकिक स्पंदन को लेखनी में समाहित करना अति दुष्कर होता अगर ये कार्य सिद्ध साधन निर्देशित न होता। अनिर्वचनीय, अलैकिक एवं अद्भुत आनंद से परिपूर्ण इस साधना यात्रा में हनुमद्प्रज्ञता साक्ष्य भाव दर्शित तथा सम्पूर्ण समर्पण के आभिर्भावभूत लक्षित हुई। इसी विशिष्ट अवस्था की समग्रता का समावेश इस रचना में लेखनीवश समाहित है।

इस स्थूल काया का अस्तित्व एकमात्र ध्यान प्रक्रिया के सम्पादन हेतु है। इसके अतिरिक्त जीव नगण्य एवं रिक्त है।

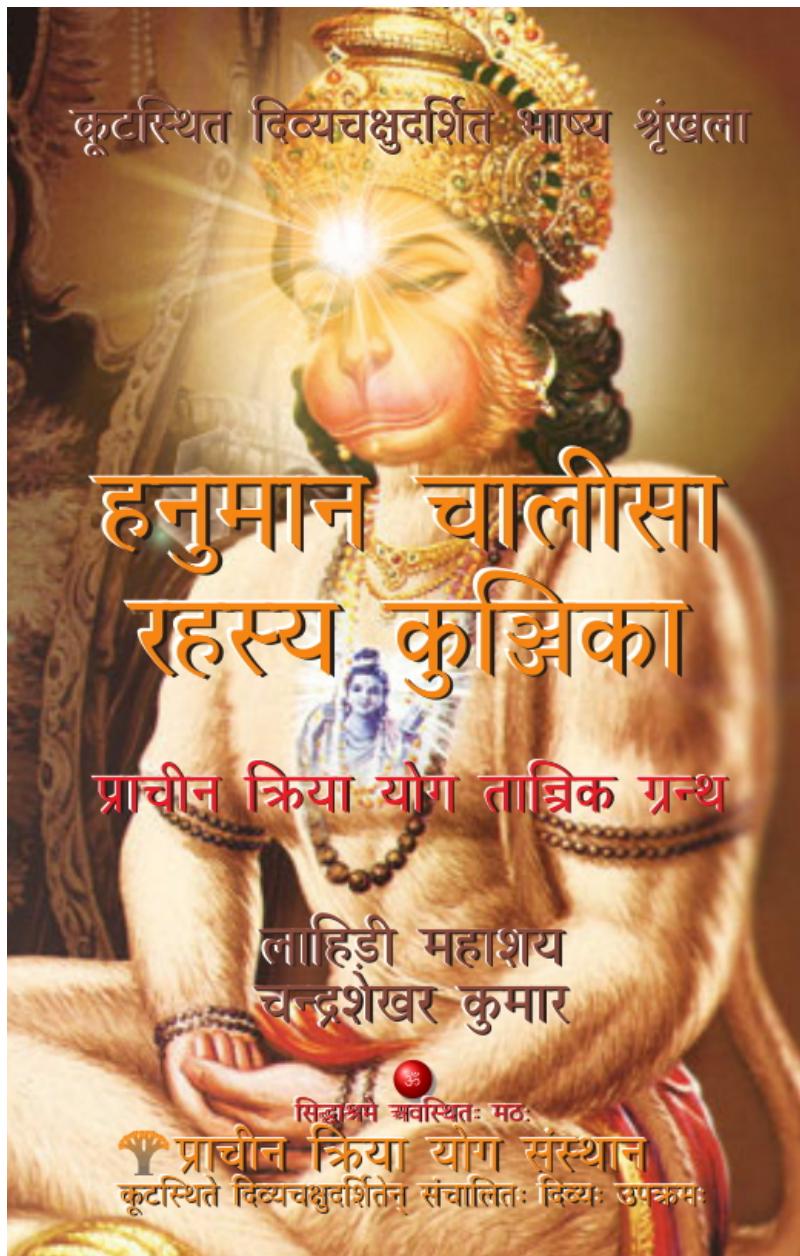
ये रचना समस्त साधकों को समर्पित है।

प्राचीन क्रिया योग संस्थान प्राचीन जीवन विज्ञान शैली को सरलता एवं सुगमता से प्रदर्शित एवं पारदर्शित करने हेतु कठिबद्ध है।

'हनुमान' सिद्धों की अति विशिष्ट अवस्था है, जिसका बहुआयामी विस्तृत विवरण 'हनुमान चालीसा' में उल्लिखित है। साधनाकाल में साधक अपरिमित चरणों से गुजरता है। किसी भी चरणविशेष के पड़ाव का निर्धारण उसकी विशिष्टता एवं साधक की अंतर्दशा से होता है। इस साधनाक्रम में साधक की बाह्य दशावलोकन से उसकी अन्तर्दशा का स्पष्ट बोध नहीं हो पाता है। बाह्य लक्षण यथा शरीर का भयानक कम्पन एवं उत्तोलन (वायु में तैरना) इत्यादि से दर्शक हत्प्रभ एवं विस्मित हो उठता है। जबकि साधक स्वयं साक्ष्य भाव से इन बाह्य लक्षणों को सरलता एवं सुगमता से स्वीकार करते हुए साधनारत रहता है।

साधना बहुआयामी होती है जिसका निर्धारण साधक की अद्वितीयता एवं प्रारब्धता से ही हो पाता है। साधक अपनी अध्यात्म यात्रा चाहे किसी भी मार्ग से आरम्भ करे, कालांतर में अनुकूलतावश वो अतर्निर्दिष्ट मार्ग पर स्वतः अग्रसर हो जाता है। एकमात्र महत्वपूर्ण सूत्र है :

पूरी सत्यनिष्ठा एवं दृढ़ लगन से स्वयं की खोज में समर्पित रहो।



विभिन्न मार्गों की विशिष्टताओं से अभिन्न साधक कालांतर में स्वयं को 'सिद्ध लोक' के पहले पायदान में पाता है। शनैः शनैः उसे ये ज्ञात होता है की ऐसी अगण्य अवस्थाएं एवं उनसे सम्बंधित स्थान सिद्ध लोक में मुद्रित हैं जिनमें से एक विशिष्ट (अवस्था + स्थान) 'हनुमान' है। साधनाकालांतर उसे इस तथ्य का स्पष्ट बोध हो जाता है कि साधनाभ्यास मूलतः क्रमिक है परन्तु साधनागत विशिष्ट अवस्था आकस्मिक है जोकि प्रारंभिक चरणों में अनैच्छिक रूप से घटित होती है।

लेखक ने अपनी आध्यात्मिक यात्रा का आरम्भ प्रचलित प्राणायाम यथा अनुलोम विलोम, कपाल भाती, भस्त्रिका एवं भ्रामरी के नित्य एक से तीन घंटे तक सामान्य अभ्यास प्रक्रिया से किया। कुछ वर्षों के उपरांत उन्हें एक गूढ़ प्राणायाम पद्धति (वायुपान विधान) का रहस्योद्घाटन हुआ जोकि मूलतः भस्त्रिका सदृश प्रतीत होती थी। इसका विस्तृत विवरण अन्य पुस्तक : Drink Air Therapy To Kill Diabetes: A Path To Self-Cure And Immortality : (अंगल भाषा में उपलब्ध) में है। कालांतर में अन्य गूढ़तम प्राणायाम प्रक्रिया का अन्तः प्राकट्य करण हुआ जिसका मूल अंग : भस्त्रिका प्राणायाम सदृश प्रणाली का सतत, सरल एवं स्वतः अनरवरत अभ्यास : है।

इतिहासवेत्ता 'हनुमान चालीसा' को गोस्वामी तुलसीदास की अप्रतिम कृति मानते हैं। कालांतर में साधक को ये सत्य विदित होता है कि इसका प्रत्येक 'शब्द' अक्षुण्ण, पारलौकिक एवं अक्षय है जिसका प्रादुर्भाव सामान्यतः अगोचर है। ये सर्वदा गुंजायमान हैं एवं सिद्धों द्वारा इनके अनवरत तथा अद्भूत कालातीत जप का श्रवण साधक को उपयुक्त काल में होता है।

## Drink Air Therapy

<https://www.amazon.in/dp/1483912116>

**Drink Air Therapy is an ancient practice for Self-Realization.**

This scripture is written for preparing common mass to embrace a very simple but powerful self-help mechanism of drinking air(not breathing air) to eradicate Diabetes(both Type 1 and 2) from root and foster longevity with healthy body and mind.

Ancient Kriya Yoga Mission is engaged in disseminating simple techniques of ancient science of living.

These simple techniques are meant to be practiced by anyone without any external assistance and guidance.

# *Drink Air Therapy to Kill Diabetes*

*A Path To Self-Cure And Immortality*



*Chandra Shekhar Kumar*

*Ancient Kriya Yoga Mission*

## वायुपान क्रिया

<https://www.amazon.in/dp/B0CP8F1BRT>

वायुपान क्रिया आत्म-सम्बोधि की एक प्राचीन प्रक्रिया है। इस ग्रन्थ का उद्देश्य जनमानस को एक अत्यन्त ही सरल एवं प्रभावशाली वायुपान (सामान्य श्वसन-प्रक्रिया से भिन्न) क्रियाभ्यास के लिए प्रेरित करना है। यह क्रिया मधुमेह (टाइप १ एवं २) के पूर्ण उन्मूलन के साथ साधक को स्वस्थ मन एवं निरोगी काया प्रदान करते हुए दीर्घजीवी अवस्था प्रदान करता है।

प्राचीन क्रिया योग संस्थान प्राचीन जीवन विज्ञान शैली को सरलता एवं सुगमता से प्रदर्शित एवं पारदर्शित करने हेतु कठिबद्ध है।

इन सरल विधियों को साधक स्वयं ही आत्मनिर्देशन एवं अन्तःस्फुरण से सम्पादित कर सकता है।

इस स्थूल काया का अस्तित्व एकमात्र ध्यान प्रक्रिया के सम्पादन हेतु है। इसके अतिरिक्त जीव नगण्य एवं रिक्त है।

कूटस्थित दिव्यचक्षुदर्शित आत्मसंरक्षण श्रृंखला

# वायुपान क्रिया

मधुमेह उन्मूलन विशेष

प्राचीन गुह्य काली आत्म चिकित्सा सञ्जीवनी विद्या

प्राचीन क्रिया योग तात्रिक ग्रन्थ



भगवान् महर्षि हिरण्यगर्भ

लाहिडी महाशय

चन्द्रशेखर कुमार



सिद्धांशमे अवास्थाः मठः

प्राचीन क्रिया योग संस्थान  
कूटस्थित दिव्यचक्षुदर्शितेन् संचालितः दिव्यः उपक्रमः

## ॐकार गीता रहस्य कुञ्जिका

<https://www.amazon.in/dp/B07SMRTNJZ/>

प्राणायाम साधना के कालान्तर में मेरुदण्ड मध्य ऊर्ध्वगामी प्राणवायु के भूमध्य अवस्थित कूटस्थ रूपी गुफा द्वार में प्रवेश के उपरान्त विलुप्तावस्था में सर्वदा गुँजायमान दिव्य प्रणव ॐ कार निनाद प्रकृतिस्वरूप का श्रवण-दर्शन होता है, जो आत्मनः स्वयंब्रह्मनादप्रकाश है। इस अवस्था में काल की स्थिरगम्यता अनिर्वचनीय योगलब्ध भाव की प्रतीक्षा मात्र ही है। अंतःकरण में आत्मगुरुब्रह्मतत्त्व का स्फुरण संचार होता है। यह एक सिद्धिजन्य, अनुभवगम्य एवं अनुभूतिपरक अविनाशी गुह्यतम कड़ी है। प्राचीन काल से ही योगी इसकी सार्वभौम गोपनीयता की प्रतिज्ञा एवं प्रण लेते-देते रहे हैं। सत्यपथगामी साधक इस गुह्य प्राच्यविज्ञान की अन्तर्निहित जटिलताओं के फलस्वरूप प्रायः दिग्भ्रमित हो जाते हैं एवं बाह्य ॐ कार ध्वनि-प्राकट्य में आत्म-निरूपण करते हैं।

इस ग्रन्थ में कूटस्थित भगवान् श्री कृष्ण एवं साधक अर्जुन के मध्य ॐ कार रहस्य संवाद का विस्तृत विवरण है। यह कृति इस दिव्य संवाद का सारोपनिषद् एवं ब्रह्मविद्या योगशास्त्र है। प्राच्यकाल में यह अपूर्व विद्या महाकाल के त्रिनेत्र में अन्तर्निहित थी जो महामाया के कालप्रवाह में विलुप्तावस्था में नियोजित हो गई। कालान्तर में अनेक ऋषि-मुनियों ने अपनी योग-तपस्चर्या की स्थिति के अनुसार इसके बहुआयामी खण्डों को प्राप्त किया जोकि श्रीमद्भगवद्गीता, अन्य उपनिषदों इत्यादि ग्रन्थों में पृथक भाव से उपलब्ध है।

यह स्थूल शरीर बाह्य ॐकार स्वरूप है।

प्राचीन किया योग संस्थान (कूटस्थिते दिव्यचक्षुदर्शितेन् संचालितः दिव्यः उपऋमः) (सिद्धाश्रमे अवस्थितः मठः) के एक मूर्धन्य मनीषि एवं रहस्यवादी गृहस्थ योगी ने अपनी अनन्य योग भक्ति तथा प्राणायाम के सघन अभ्यास से किया योग से उत्पन्न ॐकार गीता के इन अर्थों को पुनः प्राप्त किया। इन्हीं अनुभूतिजन्य एवं अनुभवपरक भावों का इस कृति में विवरण है। यह कृति प्राणायामजन्य सत्य घटनाओं एवं अनुभवों की अद्वितीय साक्ष्य है।

इस पुस्तक की रचना का आधार अन्तःपुर में ॐकार गीता के गूढ अर्थों एवं अलौकिक अनुभूतियों का रहस्योद्घाटन है। इस पारलौकिक स्पंदन को लेखनी में समाहित करना अति दुष्कर होता अगर ये कार्य सिद्ध साधन निर्देशित न होता। अनिर्वचनीय, अलौकिक एवं अद्भुत आनंद से परिपूर्ण इस साधना यात्रा में ॐकार गीता साख्य भाव दर्शित तथा सम्पूर्ण समर्पण के

आभिर्भावभूत लक्षित हुई। इसी विशिष्ट अवस्था की समग्रता का समावेश इस रचना में लेखनीवश समाहित है।

कूटस्थित दिव्यचक्षुदर्शित आत्मदर्शन श्रृंखला

# ॐकार गीता रहस्य कुञ्जिका

प्राचीन क्रिया योग तात्रिक ग्रन्थ

भगवान् महर्षि हिरण्यगर्भ  
लाहिड़ी महाशय  
चन्द्रशेखर कुमार

३५

सिद्धाश्रमे अवस्थितः मठः

प्राचीन क्रिया योग संस्थान  
कूटस्थिते दिव्यचक्षुदर्शितेन् संचालितः दिव्यः उपक्रमः

प्राचीन क्रिया योग संस्थान प्राचीन जीवन विज्ञान शैली को सरलता एवं सुगमता से प्रदर्शित एवं पारदर्शित करने हेतु कठिबद्ध हैं।

इस स्थूल काया का अस्तित्व एकमात्र ध्यान प्रक्रिया के सम्पादन हेतु है। इसके अतिरिक्त जीव नगण्य एवं रिक्त हैं।

साधनाकाल में साधक अपरिमित चरणों से गुजरता है। किसी भी चरणविशेष के पड़ाव का निर्धारण उसकी विशिष्टता एवं साधक की अंतर्देशा से होता है। इस साधनाक्रम में साधक की बाह्य दशावलोकन से उसकी अन्तर्देशा का स्पष्ट बोध नहीं हो पाता है। बाह्य लक्षण यथा शरीर का भयानक कम्पन एवं उत्तोलन (वायु में तैरना) इत्यादि से दर्शक हत्प्रभ एवं विस्मित हो उठता है। जबकि साधक स्वयं साक्ष्य भाव से इन बाह्य लक्षणों को सरलता एवं सुगमता से स्वीकार करते हुए साधनारत रहता है।

अधिकांश (सामान्य) योगी एवं इतिहासवेता ॐकार गीता को श्रीमद्भगवद्गीता इत्यादि ग्रन्थों से ही निःसृत मात्र जानते हैं। कालांतर में साधक को ये सत्य विदित होता है कि यह एक सार्वभौम विद्या है एवं इसका प्रत्येक 'शब्द' अक्षुण्ण, पारलौकिक एवं अक्षय है जिसका प्रादुर्भाव सामान्यतः अगोचर है। ये सर्वदा गुंजायमान हैं एवं सिद्धों द्वारा इनके अनवरत तथा अद्भुत कालातीत जप का श्रवण साधक को उपयुक्त काल में होता है।

## खेचरी क्रिया

<https://www.amazon.in/dp/B0CP9WBGFZ>

खेचरी क्रिया की गणना योगभक्तिपरक विज्ञान के चमत्कारिक विषयों में की जाती रही है। यह एक सिद्धिजन्य, अनुभवगम्य एवं अनुभूतिपरक अविनाशी गुह्यतम कड़ी है। प्राचीन काल से ही योगी इसकी सार्वभौम गोपनीयता की प्रतिज्ञा एवं प्रण लेते-देते रहे हैं। सत्यपथगामी साधक इस गुह्य प्राच्यविज्ञान की अन्तर्निहित जटिलताओं के फलस्वरूप प्रायः दिग्भ्रमित हो जाते हैं।

प्राच्यकाल में यह अपूर्व क्रिया व्योमगम्योपनिषद में अन्तर्निहित थी जो कालप्रवाह में विलुप्तावस्था में नियोजित हो गई। देशांतर एवं कालांतर में इसे खेचर्युपनिषद एवं त्रिशंकूपनिषद भी कहते थे। कालान्तर में अनेक ऋषि-मुनियों ने अपनी योग-तपस्चर्यों की स्थिति के अनुसार इसके बहुआयामी खण्डों को प्राप्त किया जोकि अन्य उपनिषदों, घेरण्ड सहिता, हठ योग प्रदीपिका इत्यादि ग्रन्थों में पृथक भाव से उपलब्ध है।

प्राचीन क्रिया योग संस्थान (कूटस्थिते दिव्यचक्षुर्दशितेन संचालितः दिव्यः उपक्रमः) (सिद्धाश्रमे अवस्थितः मठः) के एक मूर्धन्य मनीषि एवं रहस्यवादी गृहस्थ योगी ने अपनी अनन्य योग भक्ति तथा प्राणायाम के सधन अभ्यास से इस दुष्प्राप्य क्रिया को पुनः प्राप्त किया। खेचरी क्रिया अनन्त सिद्धिदात्री है जिसमें आकाशगामिनी विद्या सिद्धि भी एक है। साधकों के लिए यह ज्ञातव्य है कि आकाशगामिनी विद्या प्राप्ति के अनेक पथ हैं यथास्वरूप गुरुकृपाजन्य शक्तिपात, लम्बनिरोधनी योग, वायुपान पद्धति, कालिकागुह्य साधना इत्यादि। इसी भाँति खेचरी क्रिया से अन्य सिद्धियाँ हस्तगत योग्य हैं यथास्वरूप मृत्युञ्जयी, अनिमेषि, गुडाकेशि इत्यादि।

इस पुस्तक की रचना का आधार अन्तःपुर में 'व्योमगम्योपनिषद' के गूढ़ अर्थों एवं अलौकिक अनुभूतियों का रहस्योद्घाटन है। इस पारलौकिक स्पंदन को लेखनी में समाहित करना अति दुष्कर होता अगर ये कार्य सिद्ध साधन निर्देशित न होता। अनिर्वचनीय, अलौकिक एवं अद्भुत आनंद से परिपूर्ण इस साधना यात्रा में खेचरी क्रिया साख्य भाव दर्शित तथा सम्पूर्ण समर्पण के आभिर्भावभूत लक्षित हुई। इसी विशिष्ट अवस्था की समग्रता का समावेश इस रचना में लेखनीवश समाहित है।

इस स्थूल काया का अस्तित्व एकमात्र ध्यान प्रक्रिया के सम्पादन हेतु है। इसके अतिरिक्त जीव नगण्य एवं रिक्त है।

कूटस्थित दिव्यचक्षुदर्शित आत्मदर्शन श्रृंखला

# खेचरी क्रिया

व्योमणाम्योपनिषद्

प्राचीन गुह्य काली आकाशगमिनी विद्या

भगवान् महर्षि हिरण्यगर्भ

लाहिड़ी महाशय

चन्द्रशेखर कुमार

प्राचीन क्रिया योग तात्रिक ग्रन्थ

सिद्धाश्रमे अवस्थितः मठः  
प्राचीन क्रिया योग संस्थान  
कूटस्थिते दिव्यचक्षुदर्शितेन संचालितः दिव्यः उपक्रमः

'आकाशगमिता' सिद्धों की अति विशिष्ट अवस्था है, जिसका बहुआयामी विस्तृत विवरण इस ग्रन्थ में उल्लिखित है। साधनाकाल में साधक अपरिमित चरणों से गुजरता है। किसी भी चरणविशेष के पड़ाव का निर्धारण उसकी विशिष्टता एवं साधक की अंतर्देशा से होता है। इस साधनाक्रम में साधक की बाह्य दशावलोकन से उसकी अन्तर्देशा का स्पष्ट बोध नहीं हो पाता है। बाह्य लक्षण यथा शरीर का भयानक कम्पन एवं उत्तोलन (वायु में तैरना) इत्यादि से दर्शक हत्प्रभ एवं विस्मित हो उठता है। जबकि साधक स्वयं सक्ष्य भाव से इन बाह्य लक्षणों को सरलता एवं सुगमता से स्वीकार करते हुए साधनारत रहता है।

अधिकांश (सामान्य) योगी एवं इतिहासवेत्ता 'खेचरी क्रिया' को योगपरक मुद्रा मात्र जानते हैं जोकि भूख-प्यास, व्याधि, वृद्धावस्था इत्यादि से निवृत्ति का साधन मात्र है। कालांतर में साधक को ये सत्य विदित होता है कि यह एक सार्वभौम क्रिया है एवं इसका प्रत्येक 'शब्द' अक्षुण्ण, पारलौकिक एवं अक्षय है जिसका प्रादुर्भाव सामान्यतः अगोचर है। ये सर्वदा गुंजायमान है एवं सिद्धों द्वारा इनके अनवरत तथा अद्भुत कालातीत जप का श्रवण साधक को उपयुक्त काल में होता है।

## मूल क्रिया

<https://www.amazon.in/dp/B0CP9WS21H>

क्रिया ही उपनिषद् है एवं उपनिषद् ही क्रिया है। मूल क्रिया की गणना योगभक्तिपरक विज्ञान के पारिभाषिक विषयों में की जाती रही है। सत्यपठगामी साधक इस गुह्य पदार्थ विज्ञान की अन्तर्निहित जटिलताओं के फलस्वरूप प्रायः दिग्भ्रमित हो जाते हैं।

प्राचीन क्रिया योग संस्थान (कूटस्थिते दिव्यचक्षुदर्शितेन् संचालितः दिव्यः उपक्रमः) (सिद्धाश्रमे अवस्थितः मठः) के एक मूर्धन्य मनीषि एवं रहस्यवादी गृहस्थ योगी ने अपनी अनन्य योग भक्ति तथा प्राणायाम के सघन अभ्यास से इस दुष्प्राप्य क्रिया को पुनः प्राप्त किया।

इस पुस्तक की रचना का आधार अन्तःपुर में 'निरालम्बोपनिषद्' के गूढ़ अर्थों एवं अलौकिक अनुभूतियों का रहस्योद्घाटन है। इस पारलौकिक स्पंदन को लेखनी में समाहित करना अति दुष्कर होता अगर ये कार्य सिद्ध साधन निर्देशित न होता। अनिर्वचनीय, अलौकिक एवं अद्भुत आनंद से परिपूर्ण इस साधना यात्रा में मूल क्रिया साख्य भाव दर्शित तथा सम्पूर्ण समर्पण के आभिर्भावभूत लक्षित हुई। इसी विशिष्ट अवस्था की समग्रता का समावेश इस रचना में लेखनीवश समाहित है।

कालांतर में साधक को ये सत्य विदित होता है कि यह एक सार्वभौम क्रिया है एवं इसका प्रत्येक 'शब्द' अक्षुण्ण, पारलौकिक एवं अक्षय है जिसका प्रादुर्भाव सामान्यतः अगोचर है। ये सर्वदा गुंजायमान हैं एवं सिद्धों द्वारा इनके अनवरत तथा अद्भुत कालातीत जप का श्रवण साधक को उपयुक्त काल में होता है।

कूटस्थित दिव्यचक्षुदर्शित आत्मदर्शन श्रृंखला

# मूल क्रिया

निरालम्बोपनिषद्

प्राचीन गुह्य काली पदार्थ विद्या

भगवान् महर्षि हिरण्यगर्भ



प्राचीन क्रिया योग तात्रिक ग्रन्थ

 प्राचीन क्रिया योग संस्थान

सिद्धाश्रमे अवस्थितः मठः

कूटस्थिते दिव्यचक्षुदर्शितेन् संचालितः दिव्यः उपऋगः

## The Gitas

<https://www.amazon.in/dp/B08XZDTDMZ>

This is a scriptural commentary of Lahiri Mahasaya and Chandra Shekhar Kumar on The following Gitas in the Light of Kriya.

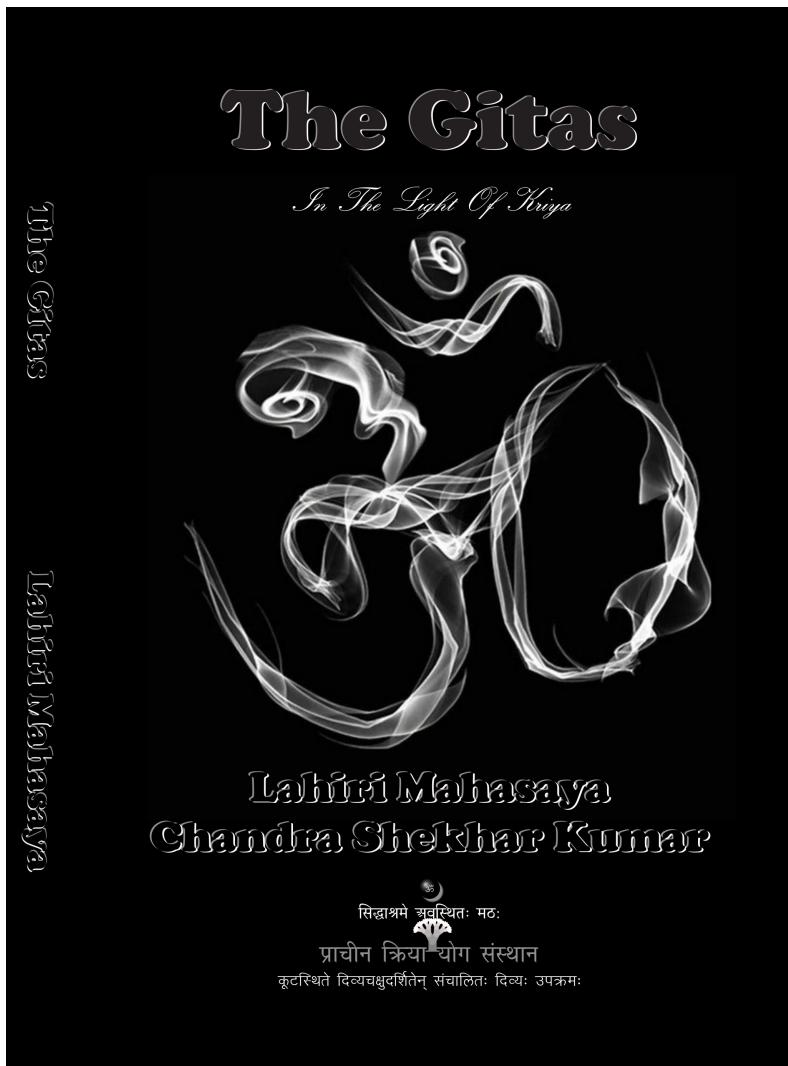
### The Kabir Gita

The Kabir Gita is a **conversation between Lord Dattatreya and Saint Kabir**. In the dialogue, Dattatreya asked Kabir the following six questions regarding the eleven subjects mind, breath, sound, Prana (life Force), Brahma (the ultimate Self), Hang Sa (Eternity), Time, Void, Jiva (individuality), Siva (Tranquility) and Niranjana (Unmanifestation):

1. What is mind ?
2. Where does mind exist ?
3. In the absence of heart, where does mind reside ?
4. What is the essence of mind ?
5. From where does mind spring ?
6. How is mind dissolved ?

### The Avadhuta Gita

Avadhuta is a truly renunciate, realized and wandering MahaYogi. Ancient MahaYogi Dattatreya's revelations to the world is The Avadhuta Gita. Dattatreya is considered by many as an incarnation of Lord Shiva.



## The Guru Gita

Guru Gita is a part of Biswasar Tantra. Divine Mother, Parvati, was sitting with Lord Siva, her divine husband, on Kailas Mountain in the Himalayas when she requested him to impart the great teaching of Guru Gita to her.

This important scripture will help the seekers of Truth to better understand and clarify the Kriya path in their pursuit of Truth:

- Who is Guru ?
- What is Guruseva (service to Guru) ?
- How does one meditate upon Guru ?

- Who is qualified to have Kriya ?

## The Omkar Gita

**This physical body is the form of Omkar.**

Please note that the Guru here means the Kutastha, i.e., the place between the eyebrows, also known as The Third Eye.

Ancient Kriya Yoga Mission is engaged in disseminating simple techniques of ancient science of living.

When the air, or breath, of the navel and dorsal are dissolved in the sky of Kutashtha, this is the third part of Omkar, or Pranava.

Every word uttered by a Yogi has a special meaning that is totally unintelligible to even the highly intellectual people. This book is written in such a way that everyone can follow it up while trading the path of Kriya. People think that they are very intelligent, but if they try to understand very seriously, they realize perfectly that nothing is happening according to their intellect.

**Only those whose breath is not blowing in the left or right nostril are intelligent in this world.**

Kutastha is Omkar in the form of inner Light due to the uniting of Akara, Ukara and Makara into one.

The Kriyanwit should read or study the Gita perfectly.

## The Bhagavad Gita

Please note that the Guru here means the Kutastha, i.e., the place between the eyebrows, also known as The Third Eye.

Ancient Kriya Yoga Mission is engaged in disseminating simple techniques of ancient science of living. Every word uttered by a Yogi has a special meaning that is totally unintelligible to even the highly intellectual people. This book is written in such a way that everyone can follow it up while trading the path of Kriya. People think that they are very intelligent, but if they try to understand very seriously, they realize perfectly that nothing is happening according to their intellect.

**Only those whose breath is not blowing in the left or right nostril are intelligent in this world.**

**Asitisatasatachaiba sahasrani trayodasa.  
Lakshaschasikoapi niswasa ahoratra pramanato.**

When breathing is faster, then in one day and one night respiration can flow up to 113,680 times. Normally during the same time, the figure is 21,600 times.

During a day and night, if respiration is faster than usual, the breath can flow in and out 113,680 times. Normally, in the course of a day and night, there are 21,600 breaths.

This figure is reduced by Kriya practice to 2,000 times. So, breathing 1,000 times in the day and 1,000 times in the night, in a normal course, provides greater Tranquility to a Yogi.

**One of his breaths takes about 44 seconds.**

Such a Yogi is matured in Kriya practice.

Thoughts are inseparably related to breathing. So, when the number of breaths is reduced, thoughts are reduced proportionately.

Eventually, with the tranquilization of breath, thoughts are dissolved. Thereby, the seeker can attain the After-effect-poise of Kriya, or eternal Tranquility, which is Amrita, nectar proper.

## कबीर गीता रहस्य कुञ्जिका

<https://www.amazon.in/dp/B07TJXC5CZ>

प्राणायाम साधना के कालान्तर में मेरुदण्ड मध्य ऊर्ध्वगामी प्राणवायु के भूमध्य अवस्थित कूटस्थ रूपी गुफा द्वारा में प्रवेश के उपरान्त विलुप्तावस्था में सर्वदा गुँजायमान दिव्य प्रणव ॐकार निनाद प्रकृतिस्वरूप का श्रवण-दर्शन होता है, जो आत्मनः स्वयंब्रह्मनादप्रकाश है।

इसी ॐकार का स्वरूप यह शारीरिक काया है। इसे ही कबीर की संज्ञा दी गयी है।

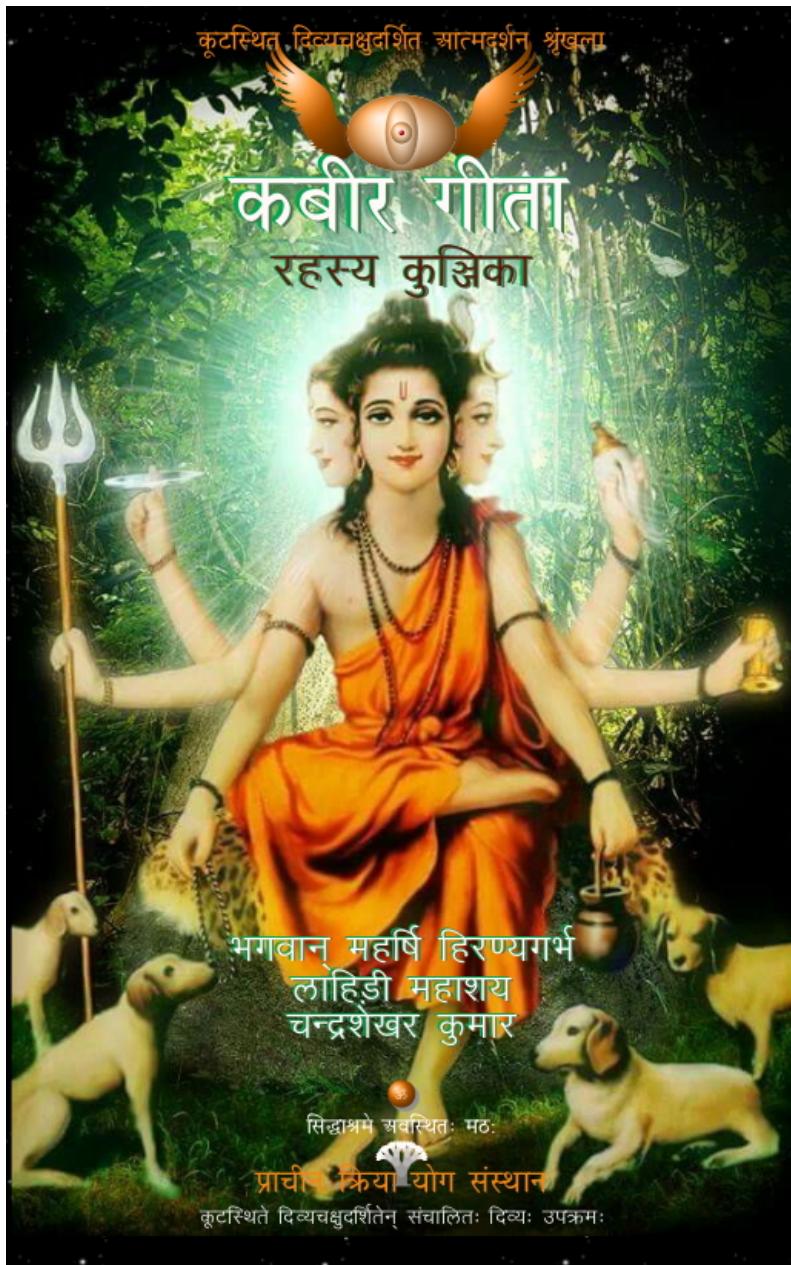
इस अवस्था में काल की स्थिरगम्यता अनिर्वचनीय योगलब्ध भाव की प्रतीक्षा मात्र ही है।

यही प्राणायाम द्वारा काल के विपरीत प्रवाह में प्रवेश की दिव्य गुह्य प्रक्रिया है।

यह एक सिद्धिजन्य, अनुभवगम्य एवं अनुभूतिप्रक अविनाशी गुह्यतम कड़ी है। प्राचीन काल से ही योगी इसकी सार्वभौम गोपनीयता की प्रतिज्ञा एवं प्रण लेते-देते रहे हैं। सत्यपथगामी साधक इस गुह्य प्राच्यविज्ञान की अन्तर्निहित जटिलताओं के फलस्वरूप प्रायः दिग्भ्रमित हो जाते हैं एवं बाह्य ॐकार ध्वनि-प्राकट्य में आत्म-निरूपण करते हैं।

इस ग्रन्थ में कूटस्थित भगवान् महर्षि दत्तात्रेय एवं योगी कबीर के मध्य दिव्य प्रश्नोत्तरी का विस्तृत विवरण है। प्राच्यकाल में यह अपूर्व विद्या महाकाल के त्रिनेत्र में अन्तर्निहित थी जो महामाया के कालप्रवाह में विलुप्तावस्था में नियोजित हो गई। कालान्तर में अनेक ऋषि-मुनियों ने अपनी योग-तपस्चर्यों की स्थिति के अनुसार इसके बहुआयामी खण्डों को प्राप्त किया जोकि दत्तात्रेय तत्र, काया सिद्धि तत्र व अन्य उपनिषदों इत्यादि ग्रन्थों में पृथक भाव से उपलब्ध है।

प्राचीन क्रिया योग संस्थान (कूटस्थिते दिव्यचक्षुदर्शितेन संचालितः दिव्यः उपक्रमः) (सिद्धाश्रमे अवस्थितः मठः) के एक मूर्धन्य मनीषि एवं रहस्यवादी गृहस्थ योगी ने अपनी अनन्य योग भक्ति तथा प्राणायाम के सघन अभ्यास से क्रिया योग से उत्पन्न कबीर गीता के इन अर्थों को पुनः प्राप्त किया। इन्हीं अनुभूतिजन्य एवं अनुभवप्रक भावों का इस कृति में विवरण है। यह कृति प्राणायामजन्य सत्य घटनाओं एवं अनुभवों की अद्वितीय साक्ष्य है।



इस पुस्तक की रचना का आधार अन्तःपुर में कबीर गीता के गूढ़ अर्थों एवं अलौकिक अनुभूतियों का रहस्योद्घाटन है। इस पारलौकिक स्पंदन को लेखनी में समाहित करना अति दुष्कर होता अगर ये कार्य सिद्ध साधन निर्देशित न होता। अनिर्वचनीय, अलौकिक एवं अद्भुत आनंद से परिपूर्ण इस साधना यात्रा में कबीर गीता साख्य भाव दर्शित तथा सम्पूर्ण समर्पण के आभिर्भावभूत लक्षित हुई। इसी विशिष्ट अवस्था की समग्रता का समावेश इस रचना में लेखनीवश समाहित है।

साधनाकाल में साधक अपरिमित चरणों से गुजरता है। किसी भी चरणविशेष के पड़ाव का निर्धारण उसकी विशिष्टता एवं साधक की अंतर्देशा से होता है। इस साधनाक्रम में साधक की बाह्य दशावलोकन से उसकी अन्तर्देशा का स्पष्ट बोध नहीं हो पाता है। बाह्य लक्षण यथा शरीर का भयानक कम्पन एवं उत्तोलन (वायु में तैरना) इत्यादि से दर्शक हत्प्रभ एवं विस्मित हो उठता है। जबकि साधक स्वयं साक्ष्य भाव से इन बाह्य लक्षणों को सरलता एवं सुगमता से स्वीकार करते हुए साधनारत रहता है।

अधिकांश (सामान्य) योगी एवं इतिहासवेता कबीर गीता को दत्तात्रेय तत्त्व, काया सिद्धि तत्त्व इत्यादि ग्रन्थों से ही निःसृत मात्र जानते हैं। कालांतर में साधक को ये सत्य विदित होता है कि यह एक सार्वभौम विद्या है एवं इसका प्रत्येक 'शब्द' अक्षुण्ण, पारलौकिक एवं अक्षय है जिसका प्रादुर्भाव सामान्यतः अगोचर है। ये सर्वदा गुजायमान हैं एवं सिद्धों द्वारा इनके अनवरत तथा अद्भुत कालातीत जप का श्रवण साधक को उपयुक्त काल में होता है।



## Selected Works of Lahiri Mahasaya

<https://www.amazon.in/dp/BOCPBTKQS9/>

This is a compilation of the following ancient kriya scriptures of Lahiri Mahasaya and Chandra Shekhar Kumar

1. The Bhagavad Gita
2. The Omkar Gita
3. The Upanishads
4. Kabir's Dohe(Couplets)

Selected Works of Lahiri Mahasaya

# Selected Works of Lahiri Mahasaya

*In The Light Of Kriya*



**Lahiri Mahasaya**  
**Chandra Shekhar Kumar**

सिद्धांशम् उवास्थितः मठः  
प्राचीन क्रिया धोग संस्थान  
कृष्णरथते दिव्यचक्रुद्धर्शितेन् संचालितः दिव्यः उपक्रमः

## तारणव क्रिया

<https://www.amazon.in/dp/B081944FGT>

कूटस्थ उपदेष्ट दशमुखी गृह महाविद्याओं के अर्जन से साधक, भावविहीन प्राणायामाभ्यास के कारण, रावण पद को प्राप्त हो जाता है। इस अवस्था में साधक को मेरुदण्डरूपी हिमालय मध्यस्थित सुषुप्ता नाड़ी के सूक्ष्माग्र सिरे (यही कैलाश है) में विचित्र अभिकम्पन की अनुभूति होती है। तदनन्तर साधक के कूटस्थ में स्थित अङ्गुष्ठ प्रमाण शिवपुरुष की माया से १०८ मुखी ताण्डव क्रिया का अभ्युदय होता है, जिसके भावपूर्वक दृढ़ प्राणायामाभ्यास से साधक शिव पद को सहज ही प्राप्त हो जाता है।

कूटस्थित दिव्यचक्षुदर्शित आत्मदर्शन श्रृंखला

# ताण्डव क्रिया

## शिव ताण्डव स्तोत्रम् रहस्य कुञ्जिका



भगवान् महर्षि हिरण्यगर्भ  
लाहौड़ी महाशय  
चन्द्रशेखर कुमार

सिद्धाश्रमे अवस्थितः मठः

प्राचीन क्रिया योग संस्थान

कूटस्थिते दिव्यचक्षुदर्शितेन् संबालितः दिव्यः उपक्रमः

## आकाशचारिणी

<https://www.amazon.in/dp/1546759727>

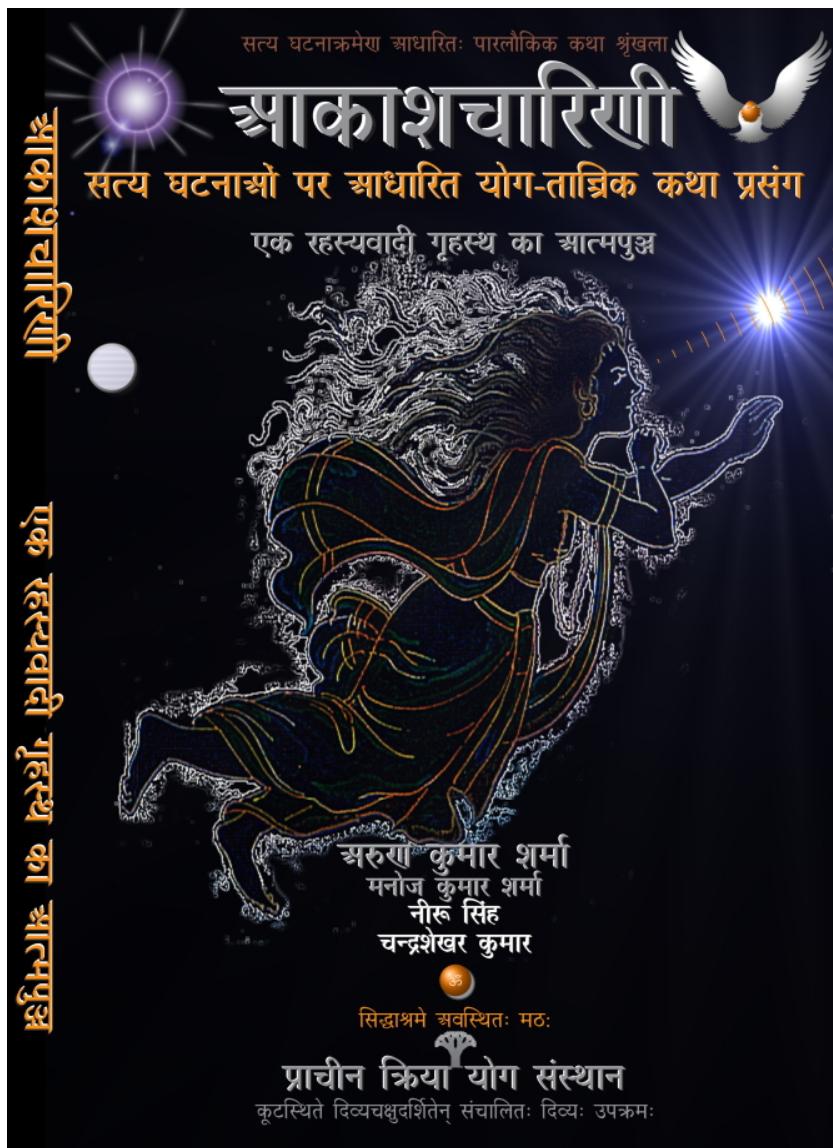
उन दिनों मेरा अधिकांश समय प्रारब्धानुसार गुप्त प्राणायाम साधना में व्यतीत होता था, लेखनी रुक-सी गयी थी। काल की स्थिरगम्यता मानों अनुभवजन्य किसी योगलब्ध भाव की प्रतीक्षा मात्र थी। दैव भाव से मेरे हाँथों में एक साथ कई कृतियाँ आ गई जिनमें 'आकाशचारिणी' भी था। कौतूहलवश कतिपय पृष्ठों के अवलोकन मात्र ने योगानन्द कृत एक विशिष्ट पुस्तक की याद दिला दी - ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए योगी। लेकिन लेखक ``अरुण कुमार शर्मा'' एक गृहस्थ अध्यात्म अन्वेषी लगे जिनका योगाभ्यास से दूर-दूर तक कोई सरोकार नहीं था, परन्तु इनकी कृतियाँ प्राणायामजन्य सत्य घटनाओं की अद्वितीय साक्ष्य थी।

स्वयं लेखक के शब्दों में -

प्रस्तुत कथा संग्रह में आप जो कुछ भी पढ़ेंगे, निश्चय ही कुछ प्रसंगों और कुछ घटनाओं पर आपको सहसा विश्वास नहीं होगा। यह स्वाभाविक भी है। मनुष्य उसी विषय वस्तु पर विश्वास करता है जो उसे स्वाभाविक प्रतीत होता है। अस्वाभाविकता उसे स्वीकार नहीं। लेकिन संसार में कुछ ऐसे भी लोग हुए हैं जिनके जीवन में अस्वाभाविक जिसे आप दूसरे शब्दों में 'अलौकिक' कह सकते हैं - घटनाएँ घटी हैं और बराबर घटती भी रहती है। यदि इसे आप अतिशयोक्ति न समझें और कल्पना अथवा विचारों की उड़ान न समझें तो ऐसे ही लोगों में एक मैं भी हूँ। मेरे जीवन में बराबर ऐसी तमाम लौकिक, पारलौकिक घटनाएँ घटी हैं, जिन पर सहसा विश्वास नहीं किया जा सकता। कभी-कभी स्वयं सौचता हूँ कि क्या मैं ही उनका प्रत्यक्षदर्शी रहा हूँ, मैंने ही अनुभव किया है उनका, यदि मैं उन अविश्वसनीय लौकिक पारलौकिक घटनाओं को सम्पूर्ण रूप से लिपिबद्ध करूँ तो एक बृहद ग्रन्थ तैयार हो जाय, लेकिन ऐसा सम्भव नहीं है मेरे लिए। मैंने उन्हीं को लिपिबद्ध करने का प्रयास किया है जिन्हें आध्यात्मिक, दार्शनिक और वैज्ञानिक दृष्टि से प्रमाणित सिद्ध करने में समर्थ रहा हूँ।

पारलौकिक जगत का अस्तित्व है इसमें सन्देह नहीं। भूत-प्रेत जैसी अशारीरी आत्माओं का अस्तित्व हैं, इसमें भी सन्देह नहीं। भूत-प्रेत, तत्र-मंत्र और लोक-परलोक आदि परामनोवैज्ञानिक विषयों पर शोध एवं अन्वेषण काल में मेरे जीवन में जो अलौकिक, पारलौकिक घटनाएँ घटी और विश्वास से परे जो अनुभव हुए और जो विलक्षण अनुभूतियाँ हुईं उन सब को सहज भाव से स्वीकार किया मैंने। इन सबके संबंध में जो कुछ देखा है और जो कुछ अनुभव किया है उन्हीं को अपनी

भाषा शैली में लिपिबद्ध कर 'आकाशचारिणी' में प्रस्तुत कर रहा हूँ। आशा है, पूर्ण विश्वास के साथ मेरे इस संग्रह को स्वीकार करेंगे आप।



कालचकानुसार इन कृतियों का वैदिक ज्ञान-सागर-प्रचार-प्रसार-कृत्य के अन्तर्गत विश्व के प्रत्येक कण में प्रवाह स्वतः निसृत हो रहा है। इस आध्यात्मिक ज्ञान की किरणें प्राचीन क्रिया योग संस्थान द्वारा परिष्कृत रूप में प्राचीन सनातन वैदिक मठ की अंतरात्मा में स्थापित हो चुकी हैं।

ऐसी ही एक कृति पी० डी० ऑसपेंसकी की टर्शियम ऑर्गेनॉन थी। प्रकृति की अबूझ पहेलियों का ये भी एक पहलू था।

प्रस्तुत कथा संग्रह आकाशचारिणी के अन्तर्गत सत्रह कथाओं का संग्रह है। ये अपने आप

में विशिष्ट तो हैं ही, रहस्य रोमांच से भरपूर और सनसनी खेज भी हैं। यद्यपि ये अविश्वसनीय लगे किन्तु इनमें अतिशयोक्ति नहीं है। लेखक की भाषा में प्राञ्जलता और भाषा पर अधिकार भी है।

### इसी पुस्तक से

...सावन-भादों का महीना था। बादलों से अटकर काला पड़ गया था आकाश। गहन निःश्वास सी पुरुवा हवा हा-हाकार करती हुई किले में दानव की तरह खड़े पेड़ों और फैली हुई झाड़ियों को कॉपा दे रही थी। घोर निस्तब्ध रात्रि। निबिड रात्रि का गहन अन्धकार। यदा-कदा अभिशप्त किले में निवास करने वाली प्रेतात्माओं की एक साथ हँसने और रोने की भयानक तीखी आवाजों से किले का निस्तब्ध वातावरण बार-बार काँप उठता था और उसी के साथ मेरा मन भी दहशत से भर जाता था। सहसा मेरी दृष्टि स्याह आकाश की ओर उठ गयी। क्यों उठ गयी थी? नहीं जानता। मगर दृष्टि उठते ही आकाश के श्याम पटल पर बादलों के बीच मैंने जो कुछ देखा उसने मुझे एकबारगी रोमान्चित कर दिया।

गहरे अन्धकार में झूबे हुए मेघाच्छन्न आकाश में मैंने देखा एक सुन्दर सी तीव्र गति से उड़ती हुई पूरब से उत्तर दिशा की ओर चली जा रही थी। उसके काले बाल बिखर कर हवा में लहरा रहे थे। उस सी की गति कभी तीव्र हो जाती तो कभी मन्द। सबसे आश्वर्य की बात थी कि मैं उस घोर अन्धकार में भी स्पष्ट देख रहा था उस आकाशगचारिणी योगिनी को। निश्चय ही वह कोई उच्चकोटि की योगसाधिका थी। देखते ही देखते वह निविड अन्धकार के आगोश में समा गयी। ...

आशा है प्रस्तुत कथा-संग्रह भी अन्य कथा-संग्रहों की भाँति पाठकों को प्रीतिकर होगी।

प्रस्तुत संस्करण का निर्माण प्राचीन क्रिया योग संस्थान (कूटस्थिते दिव्यचक्षुदर्शितेन सचालितः दिव्यः उपक्रमः) (सिद्धाश्रमे अवर्स्थितः मठः) द्वारा किया गया है। इस प्रक्रिया में कंप्यूटर प्रणाली की अत्याधुनिक विधियों (L<sup>A</sup>T<sub>E</sub>X, X<sup>E</sup>L<sub>T</sub>E<sub>X</sub>, TikZ, gimp, C++ इत्यादि) का पूर्ण प्रयोग किया गया है।

प्राचीन क्रिया योग संस्थान के एक मूर्धन्य मनीषि एवं रहस्यवादी गृहस्थ योगी ने अपनी अनन्य योग भक्ति तथा प्राणायाम के सघन अभ्यास से खेचरी सिद्ध आकाशगमिनी विद्या को पुनः प्राप्त किया। खेचरी विद्या अनन्त सिद्धिदात्री है जिसमें आकाशगमिनी विद्या सिद्धि भी एक है। साधकों के लिए यह ज्ञातव्य है कि आकाशगमिनी विद्या प्राप्ति के अनेक पथ हैं यथास्वरूप गुरुकृपाजन्य शक्तिपात, लम्बनिरोधनी योग, वायुपान पद्धति, कालिकागुहा साधना इत्यादि। इसी भाँति खेचरी विद्या से अन्य सिद्धियाँ हस्तगत योग्य हैं यथास्वरूप मृत्युज्ञयी, अनिमेषि, गुडाकेशि इत्यादि।

प्राचीन क्रिया योग संस्थान प्राचीन जीवन विज्ञान शैली को सरलता एवं सुगमता से प्रदर्शित एवं पारदर्शित करने हेतु कठिबद्ध है।

इस स्थूल काया का अस्तित्व एकमात्र ध्यान प्रक्रिया के सम्पादन हेतु है। इसके अतिरिक्त जीव नगण्य एवं रिक्त है।

'आकाशगमिता' सिद्धों की अति विशिष्ट अवस्था है, जिसका बहुआयामी विस्तृत विवरण 'खेचरी सिद्ध आकाशगमिनी विद्या रहस्य कुञ्जिका' ग्रन्थ में उल्लिखित है।

## तृतीय नेत्र

<https://www.amazon.in/dp/9354573436/>

उन दिनों मेरा अधिकांश समय प्रारब्धानुसार गुप्त प्राणायाम साधना में व्यतीत होता था, लेखनी रुक-सी गयी थी। काल की स्थिरगम्यता मानों अनुभवजन्य किसी योगलब्ध भाव की प्रतीक्षा मात्र थी। दैव भाव से मेरे हाँथों में एक साथ कई कृतियाँ आ गईं जिनमें 'तृतीय नेत्र' भी था। कौतूहलवश कतिपय पृष्ठों के अवलोकन मात्र ने योगानन्द कृत एक विशिष्ट पुस्तक की याद दिला दी - ऑटोबायोग्राफी ऑफ ए योगी। लेकिन लेखक "अरुण कुमार शर्मा" एक गृहस्थ अध्यात्म अन्वेषी लगे जिनका योगाभ्यास से दूर-दूर तक कोई सरोकार नहीं था, परन्तु इनकी कृतियाँ प्राणायामजन्य सत्य घटनाओं की अद्वितीय साक्ष्य थी।

स्वयं लेखक के शब्दों में -

'तृतीय नेत्र' में मैंने जो कुछ लिखा है और जो कुछ व्यक्त किया है, उस पर आप विश्वास करें या न करें यह आपकी अन्तरात्मा पर निर्भर है।

मैंने अपने पाण्डित्य, अध्यात्मिक ज्ञान और अपनी विद्वता को प्रदर्शित करने का कभी भी प्रयास नहीं किया है और न तो ख्यातोपलब्धि के लिए कभी कलम उठाने का ही प्रयत्न किया है मैंने।

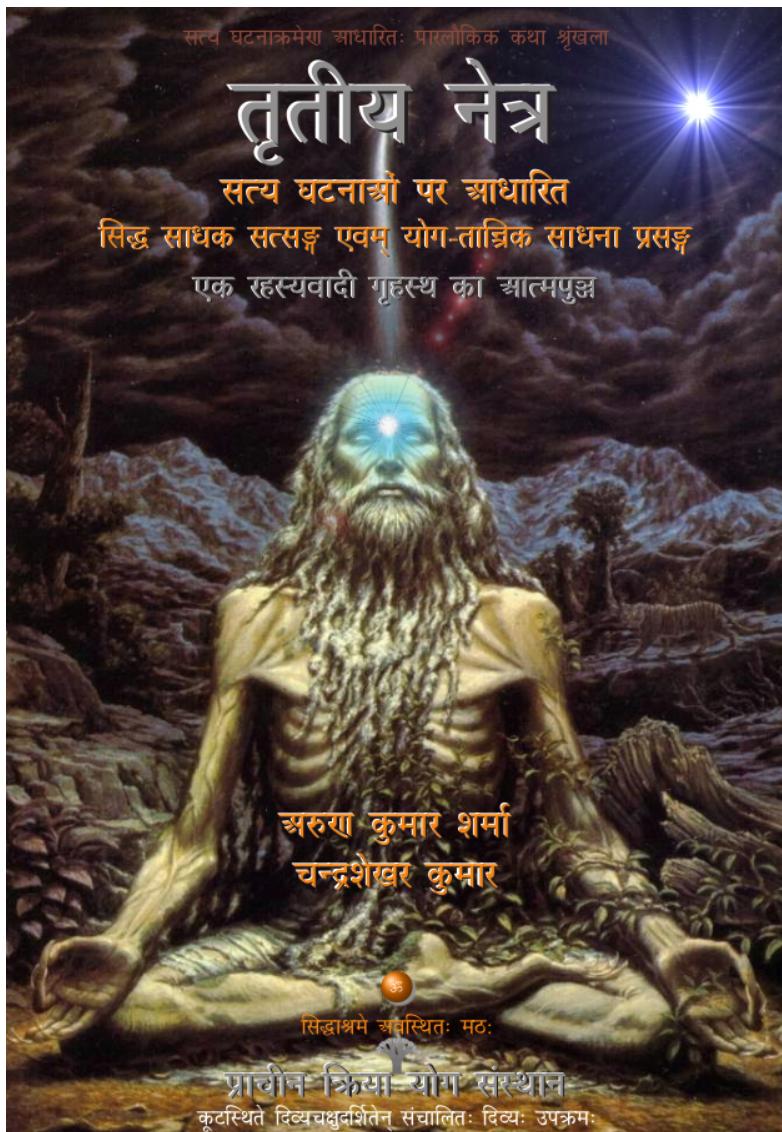
पृथ्वी विशाल है। काल का प्रवाह अनन्त है। कभी तो कोई काल के प्रवाह में पड़कर इस पृथ्वी पर जन्म लेगा और जन्म लेकर मेरे बौद्धिक श्रम का मूल्य समझेगा। मेरे आध्यात्मिक ज्ञान को हृदयंगम करेगा और महत्व देगा मेरे पाण्डित्य को।

कालचक्रानुसार इन कृतियों का वैदिक ज्ञान-सागर-प्रचार-प्रसार-कृत्य के अन्तर्गत विश्व के प्रत्येक कण में प्रवाह स्वतः निसृत हो रहा है। इस आध्यात्मिक ज्ञान की किरणें प्राचीन क्रिया योग संस्थान द्वारा परिष्कृत रूप में प्राचीन सनातन वैदिक मठ की अंतरात्मा में स्थापित हो चुकी हैं।

ऐसी ही एक कृति पी० डी० ऑसपेंसकी की टर्शियम ऑरगॉनाँ थी। प्रकृति की अबूझ पहेलियों का ये भी एक पहलू था।

प्रस्तुत कथा संग्रह तृतीय नेत्र के अन्तर्गत चतुर्दश कथाओं का संग्रह है। ये अपने आप में विशिष्ट तो हैं ही, रहस्य रोमांच से भरपूर और सनसनी खेज भी हैं। यद्यपि ये अविश्वसनीय लगे किन्तु इनमें अतिशयोक्ति नहीं है। लेखक की भाषा में प्राञ्जलता और भाषा पर अधिकार भी है।

आशा है प्रस्तुत कथा-संग्रह भी अन्य कथा-संग्रहों की भाँति पाठकों को प्रीतिकर होगी।



प्रस्तुत संस्करण का निर्माण प्राचीन क्रिया योग संस्थान (कूटस्थिते दिव्यचक्षुदर्शितेन संचालितः दिव्यः उपक्रमः) (सिद्धाश्रमे अवस्थितः मठः) द्वारा किया गया है। इस प्रक्रिया में कंप्यूटर प्रणाली की अत्याधुनिक विधियाँ (LATEX, XELATEX, TikZ, gimp, C++ इत्यादि) का पूर्ण प्रयोग किया गया है।

प्राचीन क्रिया योग संस्थान के एक मूर्धन्य मनीषि एवं रहस्यवादी गृहस्थ योगी ने अपनी अनन्य योग भक्ति तथा प्राणायाम के सघन अभ्यास से भूमध्य अवस्थित तृतीय नेत्र को जागृत किया, जिसका विस्तृत विवरण भविष्य में एक ग्रन्थ रूप में साधकों के लिए उपलब्ध होगा।

## Patanjali Yoga Sutras

<https://www.amazon.in/dp/B0CP6FHJQV>

This is a scriptural commentary of Lahiri Mahasaya on Patanjali Yoga Sutras in the Light of Kriya.

All living beings are subject to the law of cause and effect. As a result of their past actions, they suffer again and again without breaking the cycle of births and deaths.

Desires cause them to embody and reembodiment in the world.

Once in embodiment, the individual seeks happiness and avoids pain and sorrow.

Pleasure and/or pain is reaped in this life according to past good and bad actions.

Moreover, in order to be happy in this world, one should also suffer because happiness and suffering are relative. There is no escape from suffering until all desires themselves are dissolved, or transcended.

Perfect Happiness can only be found in Peace, or Shanti.

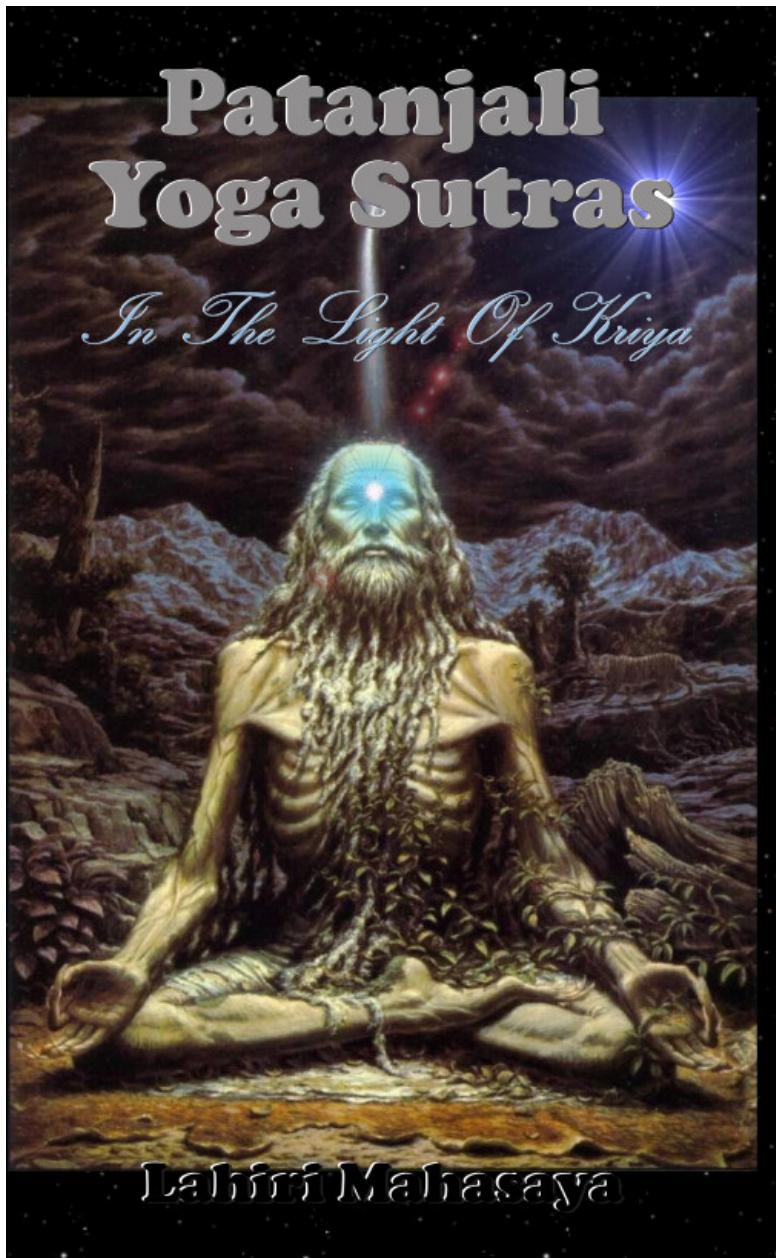
### How can one find Peace?

There is no other means for finding Peace except through the practice of Yoga. By the practice of Yoga, the tremendously restless heart becomes calm. Not only does the heart become calm by Yoga practice, but longevity is also increased. The body becomes healthy, and absolute Knowledge is gained.

### Who can tell how long a man will remain alive?

It is well known that even ordinary people, without mentioning Yogis, can live up to one-hundred to one-hundred-fifty years. It is also admitted that, starting with the body in the mother's womb up to the age of eighty, individuals are faced with premature death.

### What is the cause of premature death?



**How can one prevent it?**

**Who is also lucky not to be afflicted with hereditary ill-health or premature death?**

Individuals themselves are the cause of their own death. It will become clear when one analyzes the nature of his restless activities and desires in search of Happiness.

**What could be more desirable than to enjoy Peace with a steadfast heart?**

It In not so easy to remain steadfastly calm no matter what happens in life.

**But why in this not possible?**

**Where is one's command over the mind?**

One shall have to tactically acquire dominion over the mind. That can only be accomplished by Yoga practice.

Body and mind are so closely interrelated that any feeling of happiness or sorrow, pleasure or pain, in the one will immediately be communicated to the other. If one calms his mind, he will soon notice that all other outer activities, or "Kriya" have also become almost as calm. If one tactically stops physical activities, "Kriyas", he will realize that his mind has also become calm.

It is possible to live even when all physical and mental activities have come to a stop when one practices Yoga.

Yoga is one of the six systems of philosophy. Yogi Patanjali is the founder of this system as well as the author of the many commentaries on Yogi Panini (the father of Sanskrit grammar).

Patanjali is very close to those who have accepted the Yoga path.

Many people consider the ancient Yogi Hiranyagarva to be the father of Raja Yoga. The treatise of Yogi Hiranyagarva is lost. It is the opinion of many scholars that Yogi Patanjali (literally, Pata means "leaf", and anjali means "offering to the Lord"), through meditation, actually recovered Hiranyagarva's treatise and presented it as the Yoga Sutras.

However, in the light of Kriya, Hiranya means "golden radiation" of the Kutastha, the inner Self, and garva means "the womb", that is, "between the eyebrows (from where the individual self is born)", or he who actually reveals the science of the ultimate Self to the sincere Kriyanwit.

This very valuable, tiny book is divided into four parts:

1. In the first part, it describes the nature of Yoga, Samadhi, or "Attunement" with the ultimate Self and discusses its various aspects.
2. In the second part, the first five steps of the eightfold Yoga path are outlined for the benefit of the truth seeker.
3. In the third part, the last three steps are outlined, namely, Dharana ("concept of Tranquility"), Dhyana ("meditation") and Samadhi ("Attunement"). The state of going within during meditation practice and the danger of developing yogic powers on discussed.
4. In fourth part, Kaivalya, or "the highest Liberation", is discussed.

In fact, **discussion of Yoga** is the aim of this book.

## Linga Puran

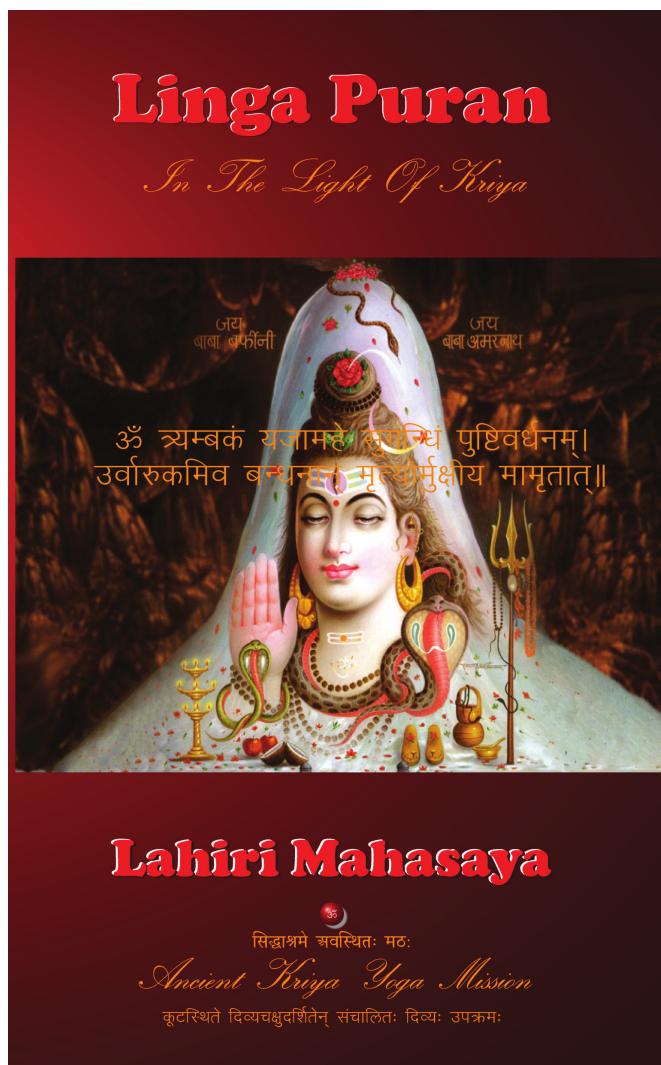
<https://www.amazon.in/dp/B0CP8FCFXD>

This is a scriptural commentary of Lahiri Mahasaya on Linga Puran, In The Light of Kriya.

There is nothing to say or to write as the Self is Omnipresent, Ultimate Consciousness (Brahma). So who will say to whom and who will write what?

- When the body trembles, it is medium Pranayam.
- **When the body levitates, it is super Pranayam.**
- Seeing the inner Visions is called Darsan.
- The Kriyanwit, holding onto the After-effect-poise of Kriya in Samadhi, stays like a corpse.
- The Yogi becomes extremely powerful and inward when he holds onto the After-effect-poise of Kriya for a whole year. His sperm become golden. He becomes Omniscient and generates good Seed. His arms reach out in ten directions, and he may accept whatever he wants to.
- The eyes of one who holds onto the After-effect-poise of Kriya do not blink (nimes). That is why he is called Animes.
- Those who walk on the earth and who fly in the sky, like renunciates and energetic beings, all are holding eight kinds of powers through earth, water, fire, air and ether.
- At the After-effect-poise (Turiya) of Kriya, one does not like to speak.
- He is Kapali, that is, He holds the air in the forehead (Kapal).

- He stays at Kailash Mountain, that is, at the head, at the After-effect-poise (Turiya) of Kriya like the ultimate Self.
- He is Guhavashi. That is, in the Star in between the eyebrows there is a cave where He lives.
- He is Kulahari. That is, He snatches away the energy of Kulakundalini.
- This body is the sound of OM or Pranava.
- Prana makes all beings tranquil by the practice of Kriya in this body. That is why it is called Pranava. This very breath is spread over in all bodies. That is why Mahadeva is all pervading and everywhere in all beings.



In ancient times, the disciples sat near the Guru to learn the spiritual discipline from the living lips of their Guru to realize the supreme Self. They practiced strictly in accordance with the instructor they received personally from the living lips of their Guru.

This is a Kriya Yoga book intended to be read and practiced by everyone, with/without initiation.

Please note that the Guru here means the Kutastha, i.e., the place between the eyebrows, also known as The Third Eye.

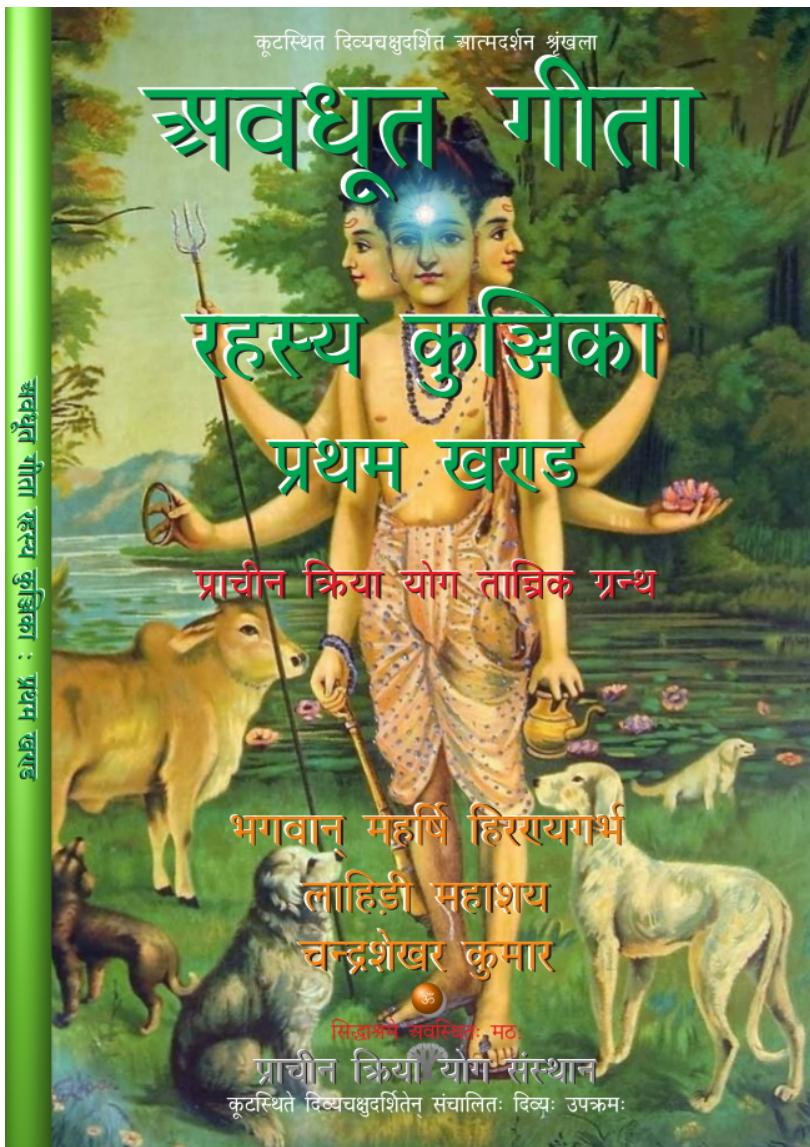
Ancient Kriya Yoga Mission is engaged in disseminating simple techniques of ancient science of living. Every word uttered by a Yogi has a special meaning that is totally unintelligible to even the highly intellectual people. This book is written in such a way that everyone can follow it up while trading the path of Kriya. People think that they are very intelligent, but if they try to understand very seriously, they realize perfectly that nothing is happening according to their intellect..

## अवधूत गीता रहस्य कुञ्जिका

<https://www.amazon.in/dp/B0CPBJZF6B>

उन दिनों मेरा अधिकांश समय प्रारब्धानुसार गुप्त प्राणायाम साधना में व्यतीत होता था, लेखनी रुक-सी गयी थी। काल की स्थिरगम्यता मानों अनुभवजन्य किसी योगलब्ध भाव की प्रतीक्षा मात्र थी। मैं दिव्य भाव से त्राटक प्रक्रिया में संलग्न रहा। ३ दिवस कैसे व्यतीत हुए ये ज्ञात ही नहीं हुआ। अपने आप ही लेखनी उठ गयी एवं अनवरत लिखाइ चलती रही। अंतःकरण में आत्मगुरुब्रह्मितत्त्व का स्फुरण संचार हो रहा था। इन्हीं अनुभूतिजन्य एवं अनुभवपरक भावों का अवधूत गीता के इन दो अध्यायों में विवरण है। यह कृति प्राणायामजन्य सत्य घटनाओं एवं अनुभवों की अद्वितीय साक्ष्य है।

प्राचीन क्रिया योग संस्थान के एक मूर्धन्य मनीषि एवं रहस्यवादी गृहस्थ योगी ने अपनी अनन्य योग भक्ति तथा प्राणायाम के सघन अभ्यास से क्रिया योग से उत्पन्न अवधूत गीता के इन अर्थों को पुनः प्राप्त किया।

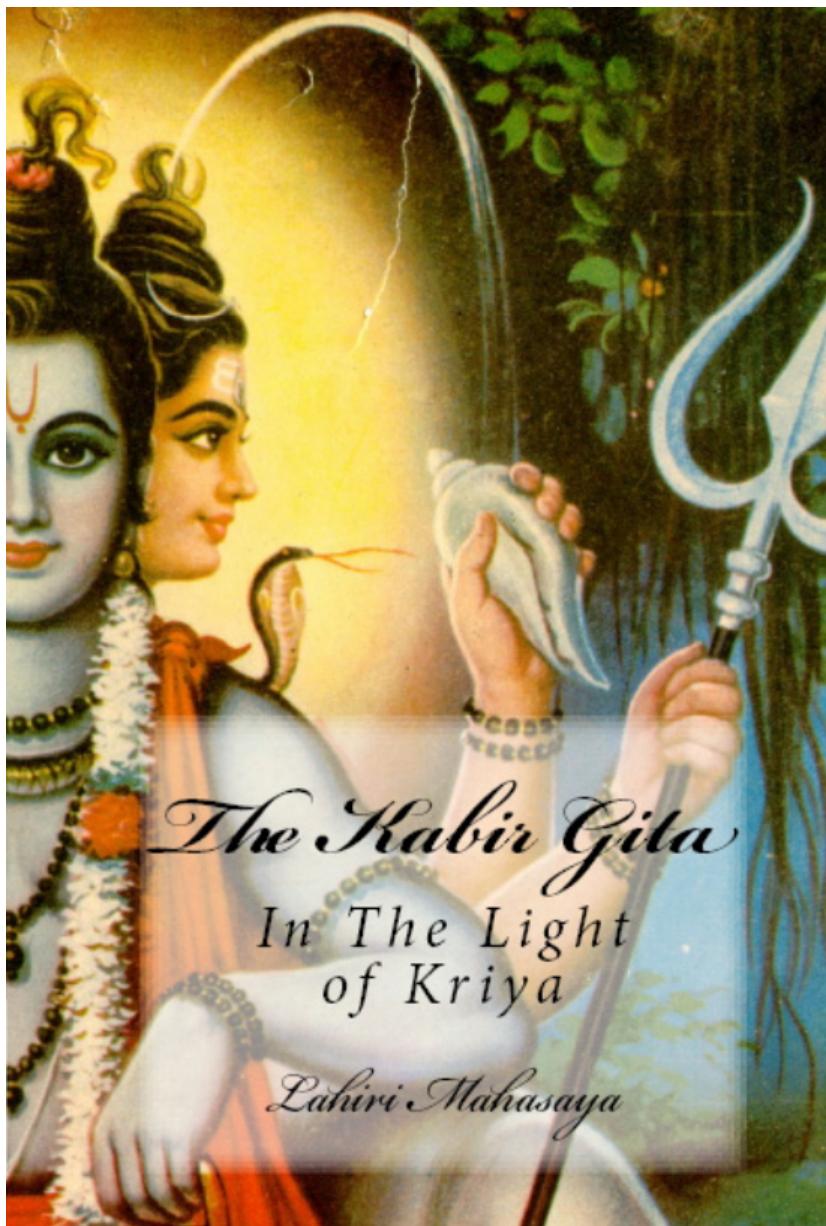


## The Kabir Gita

<https://www.amazon.in/dp/B0CPBKVNHN>

This is a scriptural commentary of Lahiri Mahasaya on Kabir Gita in the Light of Kriya in which is a **conversation between Lord Dattatreya and Saint Kabir**. In the dialogue, Dattatreya asked Kabir the following six questions regarding the eleven subjects mind, breath, sound, Prana (life Force), Brahma (the ultimate Self), Hang Sa (Eternity), Time, Void, Jiva (individuality), Shiva (Tranquility) and Niranjana (Unmanifestation):

1. What is mind ?
2. Where does mind exist ?
3. In the absence of heart, where does mind reside ?
4. What is the essence of mind ?
5. From where does mind spring ?
6. How is mind dissolved ?



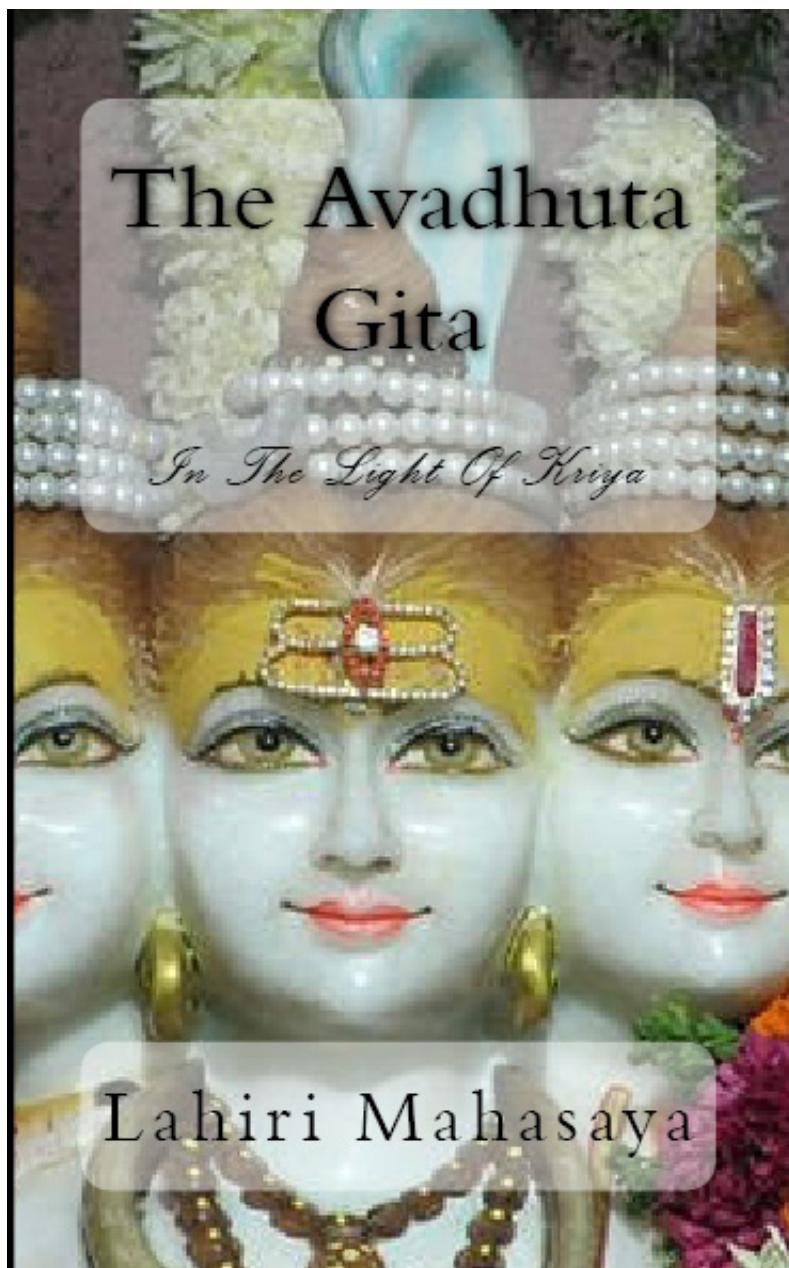
*The Kabir Gita*  
In The Light  
of Kriya

*Lahiri Mahasaya*

## The Avadhuta Gita

<https://www.amazon.in/dp/B09HQZF4CP>

This is a scriptural commentary of Lahiri Mahasaya on The Avadhuta Gita in the Light of Kriya. Avadhuta is a truly renunciate, realized and wandering MahaYogi. Ancient MahaYogi Dattatreya's revelations to the world is The Avadhuta Gita. Dattatreya is considered by many as an incarnation of Lord Shiva.



## The Upanishads

<https://www.amazon.in/dp/B0CP8F8L8W>

This is a scriptural commentary of Lahiri Mahasaya on The Upanishads.

If we scan the word Upanisad, we see that Upa means “sitting” and nisad means “near.” Thus, the very word Upanisad specifies personal relationship: the Guru-param-para [Master to Disciple learning from the living lips of a Guru].

In ancient times, the disciples sat near the Guru to learn the spiritual discipline from the living lips of their Guru to realize the supreme Self. They practiced strictly in accordance with the instructor they received personally from the living lips of their Guru.

This is a Kriya Yoga book intended to be read and practiced by everyone, with/without initiation.

